बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

**डॉ० आशा कुमारी**

**अतिथि व्याख्याता**

**हिन्दी विभाग**

**मगध महिला कॉलेज, पटना**

**मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162**

**Email _ ashakumari2500@Gmail.com.**

# रतन का चरित्र–चित्रण

नारी के प्रति प्रेमचन्द की सहज सहानुभूति थी। वह उसे सुखी देखना चाहते थे। भारत में विधवाओं की जो दुर्दशा है, वह किसी से छिपी नही है। साथ ही भारत में अनमेल विवाह भी बहुत होते हैं। ये दोनों बातें पारिवारिक जीवन की सुख–शांति के लिए कितनी हानिकारक है, इसका अनुमान रतन के चरित्र से अनायास ही लगाया जा सकता है। वास्तव में इस उपन्यास में उसकी सृष्टि इन्हीं कुरीतियों के दुष्परिणाम को दिखाने के लिए की गई है।

उपन्यास में जालपा को छोड़कर स्त्री पात्रों में उसका दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है। वह जालपा की सहेली तथा इंद्रभूषण एडवोकेट की दूसरी पत्नी है। रतन के चरित्र को दो भागों में विभक्त करके देखा जा सकता है– एक तो पत्नी के रूप में और दूसरे विधवा के रूप में। यह अपने जीवन में आनंद के साथ ही दुःख के दिन भी देखती है। उसका विवाहित जीवन सुख और आनंद से परिपूर्ण है, लेकिन पति की मृत्यु के उपरांत उसके जीवन में दुःख के बादल घिर आते है। उपन्यास में रतन ही ऐसी स्त्री पात्र है, जिसे विधवा जीवन का क्लेश एवं पीड़ा सहन करनी पड़ती है। उसकी इस पीड़ा ने उसके चरित्र को और भी उज्ज्वल बना दिया है। अतः उसके चरित्र को निम्नलिखित रूपों में देखा फ्फसकता हैः–

(1) पत्नी रूपः–रतन साँवलें रंग की एवं सुगठित थी। वह उतनी सुदंर भी नहीं थी। नाक चिपटी, मुख गोल, आँखें छोटी, फिर भी वह रानी–सी लगती थी। ऐसी रतना का विवाह साठ वर्ष की उम्र वाले वकील इंद्रभूषण से होता है। रतन के मामा ने वकील साहब से इस विवाह के लिए अवश्य ही रूपयें लिए होंगे–ऐसा रतन भी सोचती है। वह खर्च करने के लिए स्वतंत्र है। जो कुछ वकील साहब वकालत में कमाते है। वह सब रतन के हाथ पर रख देते हैं। रतन जालपा से कहती हैं–'' मुझे तो उन पर दया आती है। अपने से जहाँ तक हो सकता है, इनकी सेवा करती हूँ। आखिर यह मेरे लिए तो अपनी जान खपा रहें हैं।'' रतन के पत्नी रूप में सदानुराग, सरल प्रेम, धर्म परायणता, पति–भक्ति, सेवानिष्ठा तथा श्रृंगारिक उपकरणों में रूचि दिखायी देती है। जालपा के रूप सौंदर्य और मिलन–स्वभाव से आकृष्ट होकर रतन उससे मैत्री स्थापित करती है। अकेले से उसका जी घबराता है, अतः वह जालपा से घड़ी आध घड़ी रोज आ जाने की प्रार्थना करती है। इस मैत्री में किसी प्रकार का छल नहीं, स्वार्थ नहीं, केवल निश्छल प्रेम है। उसका जालपा तथा रमानाथ अपने दफ्तर से रूपयों की थैली लाता है, जिसे

जालपा रूपये माँगने पर रतन को दे देती है। रमानाथ रतन से रूपये वापस न माँग सका और इस प्रकार उसे प्रयाग से भाग जाने को बाध्य होना पड़ा।

रतन को आभूषणों, दावतों, उत्सवों आदि से प्रेम अवश्य है, लेकिन वह अपने पति से विशेष प्रेम करती है। वह एक वृद्ध पति की युवती पत्नी है। लेकिन इस दृष्टि से उसने कभी कोई शिकायत नहीं की। लेखक ने रतन के चरित्र में भारतीय पत्नीत्व का आदर्श समाविष्ट कर दिया है। वह कहती है– मैं स्वयं युवती हूँ और वह बूढ़े हैं। मेरे हृदय में जितना प्रेम, जितना अनुराग है वह सब मैंने उनके ऊपर अर्पण कर दिया अनुराग, यौवन या रूप या धन से नहीं उत्पन्न होता। अनुराग अनुराग से उत्पन्न होता है। वह अपने वृद्ध पति को इलाज के लिए कलकत्ता ले जाती है और उन्हें बचाने का पूरा उद्योग करती है। पति की मृत्यु तक वह उनकी सेवा करने में लगी रहती है। घर में नौकर–चाकर रहते हुए भी वह उनके सरल स्वभाव की प्रशंसा करती है और अपने लिए कहती है, 'मैंने इन्हें धनोर्पाजन के सिवा और क्या समझा ? यह कितना चाहते थे कि मैं इनके साथ बैठूँ और बातें करूँ पर मैं भागती फिरती थी। मैंने कभी इनके हृदय के समीप जाने की चेष्ठा नहीं की, कभी प्रेम की दृष्टि से नहीं देखा।'

(2) सहृदया एवं दयाशील प्रवृत्तिः– अपने विवाहित जीवन में रतन सहृदय एवं कृपालु है। उसे दूसरों का दुःख–दर्द अनुभव करना आता है। रमानाथ के भाग जाने के बाद वह जालपा के प्रति सहृदय हो उठती है और उसके कंगन  खरीद कर उसकी सहायता करती है। यहीं नहीं, पति का इलाज कराने के लिए कलकत्ता जाने से पहले वह कुछ रूपये जालपा के पास सहायतार्थ रख जाना चाहती है। शतरंज के नक्शे को 'प्रजामित्र' समाचार पत्र में भेजते समय उपहार के लिए पचास रूपये वहीं देती है। वह कलकत्ता जाकर रमानाथ को खोजने का प्रयास करती  है।

इस प्रकार, उसे अपनी धनी होने का अभिमान नहीं है और वह जालपा को अपनी बहन समझकर उसकी सहायता करती है। वह इस सहृदयता को दिखाने के लिए नहीं, बल्कि हृदय की प्रेरणा से करती है। उसके चरित्र में कहीं भी मिथ्या–प्रदर्शन एवं अभिमान की प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती। उसके चरित्र में जो कुछ भी दुर्गुण थे, उनको वह पति की मृत्यु के बाद याद करती है। पति की मृत्यु होते ही उसने पति के शीतल चरणों पर सिर झुका दिया और बिलख–बिलख कर रोने लगी। उसने अपनी स्थिति वाली अन्य स्त्रियों की अपेक्षा अपने पति के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया था, लेकिन वह अपनी कर्त्तव्यहीनता, निष्ठुरता तथा श्रृंगार–लोलुपता के कारण अपने को बहुत बड़ा अपराधी समझ रही थी।

3 विधवा रूपः– रतन के जीवन का दूसरा अध्याय उसके पति की मृत्यु से आरंभ होता है। पति की मृत्यु के उपरांत श्राद्ध के दिन उसने जालपा से कहा–''मुझे तो कभी यह ख्याल नहीं आया बहन कि मैं युवती हूँ।' वस्त्र और आभूषण महापात्र को दान कर दिए। उसका स्वभाव कोमल हो गया और पति के गुणगान के अतिरिक्त अन्य किसी भाव को मन में लाना यह पाप समझने लगी। वकील साहब की मृत्यु के बाद उनका भतीजा मणिभूषण आकर सारी संपत्ति पर अधिकार करना प्रारम्भ कर देता है। रतन को उसकी चालबाजियाँ ज्ञात नहीं होती, क्योंकि शोक और मनस्ताप न उनके मन को इतना कोमल बना दिया था कि उस पर किसी की छाप पड़ सकती थी, उसे किसी पर संदेह न था, किसी प शंका नहीं थी, उसके सामने कोई चोर भी उसकी संपत्ति का अपहरण करता तो वह शोर न मचाती। मणिभूषण उसके इस स्वभाव से लाभ उठाता रहा और एक दिन रतन को सूचित किया कि मैंने बंगला बेच दिया है, अतः इसे आज ही खाली करना होगा। रतन के कहने पर कि तुम मेरी इच्छा के बिना यहाँ की कोई चीज नहीं बचे सकते, मणिभूषण विधवा की असहाय स्थिति को माने स्पष्ट करने के लिए कहता है–'सम्मिलित परिवार में विधवा का अपने पुरूष की संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं होता।'

इस प्रकार, रतन वकील साहब की संपत्ति की स्वामिनी न बन सकी, लेकिन उसने निश्चय किया कि जो कुछ मेरा नहीं है, उसे लेने के लिए झूठ का आश्रय न लूँगी। रतन के इन शब्दों में भारतीय विधवा जीवन की पीड़ा व्यक्त होने से रूक न सकी–'मगर ऐसा कानून बनाया किसने? क्या स्त्री इतनी नीच इतनी तुच्छ इतनी नगण्य है क्यों?' वह मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पालने का दृढ़ संकल्प करती है और अपने पति की सारी संपत्ति मणिभूषण के हाथों में सौंप कर जालपा के घर का आश्रय लेती है। रतन का वास्तविक जीवन यहीं से आरंभ होता है।

रतन रमानाथ और देवीदीन के साथ रहने लगती है। देवीदीन उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होता है और उसे बड़े उच्च विचार की औरत मानता है। रतन जोहरा को अपना स्नेह एवं सहानुभूति प्रदान करती है। रतन का अंतिम समय अत्यंत मार्मिक है। देवीदीन , जालपा, जोहरा, राजेश्वरी के बीच अपने प्राण त्याग देती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यह चरित्र यथार्थ से आदर्श तक पहुँचने के बाद इस संसार से उठ जाता है। प्रेमचंद ने उसके चरित्र में भी आदर्शवाद के तत्त्वों को समाहित कर दिया है। जालपा के समान वह भी गहनों से प्रेम करती है, लेकिन पति–सेवा में वह जालपा से ऊपर उठ गई है।